wants all the details about Himachal Pradesh, I shall supply them.

MR. SPEAKER: Question Hour is over.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Sir, the doctors are on indefinite strike and the Government is a silent spectator. .(*Interruptions*). What is the Government going to do about this?

(*Interruptions*)**

MR. SPEAKER: Without my permission nothing should be recorded.

(*Interruptions*)**

MR. SPEAKER: We have a Short Notice Question. Before we proceed with the Short Notice Question, the Prime Minister would like to make a statement.

VICTORY OF INDIAN HOCKEY TEAM AT THE MOSCOW OLYMPICS

THE PRIME MINISTER (SHRIMATI INDIRA GANDHI): Mr. Speaker, Sir, if the hon. Members allow me, on their behalf and also on my own behalf I should like to express our pleasure at the victory of our Hockey Team in the Olympic games in Moscow and to convey to the members of the Team our hearty congratulations and greetings.

MR. SPEAKER: Now, Short Notice Question.

SHORT NOTICE QUESTION

दिल्ली में डकैतियों में वृद्धि

†

1. श्री अटल बिहारी वाजपेयी :
डा० बसन्त कुमार पण्डित :
श्री के० लक्कप्पा :

क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि पिछले कुछ दिनों में दिल्ली मे सशस्त्र डकैतियो की संख्या में बहुत भारी वृद्धि हुई है ;

(ख) यदि हां, तो विगत 15 दिनों में पड़ी डकैतियों का ब्यौरा क्या है और कितने मामलों में पुलिस अपराधियों का पता लगाने में सफल रही है ; और

(ग) क्या यह सच है कि लारेंस रोड के निकट रामपुरा में 22 जुलाई, 1980 की रात को पड़ने वाली डकैती जिसमें डकत 1,70,000 रुपये नकद तथा कुछ जेवरात ले जाने में सफल हो गए थे, पुलिस घटनास्थल पर बहुत देरी से पहुंची थी ।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाना) : (क) और (ख). जी, नहीं, श्रीमान 11-7-1980 से 26-7-1980 तक के पखवाड़े के दौरान दिल्ली में डकैती के दो मामले सूचित किए गए, जबकि गत वर्ष इसी अवधि के दौरान ऐसे 4 मामले सूचित किए गए थे । इन दो मामलों का ब्यौरा सभा पटल पर रखे गए विवरण में दिया गया है ।

(ग) यह डकैती नहीं बल्कि लूटमार की घटना है । यह सही नहीं है कि पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचने में विलम्ब किया था । वास्तव में केन्द्रीय पुलिस नियंत्रण कक्ष द्वारा टेलीफोन पर सूचना प्राप्त करने के 15 मिनट बाद, पुलिस घटनास्थल पर पहुंच गई थी ।

विवरण

11-7-1980 से 26-7-1980 की अवधि के दौरान सूचित किए गए डकैती के दो मामलों का ब्यौरा इस प्रकार है :-

1 पुलिस स्टेशन किंग्सवे कैम्प में भारतीय दंड संहिता की धारा 395-397 के अन्तर्गत तारीख 15-7-1980 की प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 526

सी-1/ माडल टाउन दिल्ली के निवासी श्री संतोष ने सूचित किया कि 15-7-1980 को प्रात: लगभग 3.45 बजे, चौकीदार धन बहादुर ने उन्हें सूचिग किया कि घर का एक दरवाजा खुला है । उन्होने इसकी जांच की और पाया कि उनके बड़े भाई श्री बिजय भंडारी और उनकी पत्नी श्रीमती अरूणा भंडारी अपने बिस्तरो में घायल पड़े है और वस्तुएं बिखरी पड़ी हुई हैं । उन्होंने पुलिस नियंत्रण कक्ष को सूचित किया । उनकी भतीजी के अनुसार लगभग 3.30 बजे प्रात: 5 व्यक्ति कमरे में आए, दम्पति को पीटा घर को लूटा और जेवरात आदि लेकर भाग गए ।

2 पुलिस स्टेशन करोल बाग में भा० दंड संहिता की धारा 295 के अन्तर्गत तारीख 19-7-1980 की प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 695

19-7-1980 को शिकायतकर्ता श्री सुभाष चन्द अग्रवाल अपनी गेहूं की दुकान सं० 5465 रैगहपुरा के पास सो रहा था । लगभग 4 बजे प्रात: एक ट्रक सं० डी० एल० जी० 8441 में कुछ व्यक्ति आए और गेहूं की दो बोरियां उठाई । जब शिकायतकर्ता नींद से जागा और देखा तो अपराधियों ने उसे मारा पीटा और सम्पति लेकर भाग गए । पुलिस ने तत्परता से कार्रवाई की । अब तक निम्नलिखित दोषी गिरफतार किए गए है:-

1. गोपी कृष्ण, वाहन चालक ।
2. सुखदेव सिंह उर्फ सुखा ।

**Not recorded.

3. जय नारायण ।

4. ओम प्रकाश ।

ट्रक पकड़ लिया गया है । यह मालूम हुआ है कि एक बोरी गेहूं लूटा गया था जिसे बरामद कर लिया गया है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, इस से पहले कि मैं गृह मंत्री महोदय से सवाल पूछूं, मैं एक बात की ओर आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं । गृह मंत्री महोदय ने जो उत्तर दिया है वह मेरे प्रश्न के जवाब में तो दिया है लेकिन उसमें ऐसी जानकारी जोड़ दी है जो मैंने नहीं मांगी थी । क्या मंत्री महोदय के लिए यह उचित है कि जो जानकारी मांगी नहीं गयी है उसे भी मंत्री महोदय मेरे सवाल के जवाब में दें ? जरा जवाब देखिये । मेरा सवाल यह था कि :

"क्या यह सच है कि पिछले कुछ दिनों में दिल्ली में सशस्त्र डकैतियों की संख्या में बहुत भारी वृद्धि हुई है ?

जवाब क्या है—

"जी नहीं, श्रीमान । 11-7-1980 से 26-7-1980 तक के पखवाड़े के दौरान दिल्ली में डकैती के दो मामले सूचित किए गए । यहां तक तो ठीक है लेकिन मंत्री महोदय ने आगे यह भी जोड़ दिया : जबकि गत वर्ष इसी अवधि के दौरान ऐसे 4 मामले सूचित किए गए थे । इन दो मामलों का ब्यौरा सभा पटल पर रखे गए विवरण में दिया गया है ।' पिछले साल क्या हुआ यह कैसे पैदा होता है ? जो जानकारी मांगी नही गई उसे आज देने के लिए मंत्री महोदय बड़े उदार हो गए । अभी तक हाल यह था कि हम पूछते थे और वह बताते नहीं थे, आज बिना पूछे बता रहे है ।

एक गड़बड़ हुई है इसमें । उन्होंने पिछले साल की संख्या डकैतियों की बताई है कि चार पड़ी थी । इस साल इनको कम करके बतानी थीं पचास परसेंट कट ! दो डकैतियों बता दी है और जो डकैतियां बताई है उन में 22 तारीख को लारेंस रोड के निकट रामपुरा में जो डकैती हुई थी और जिस में 1 लाख 70 हजार रुपये डाकू लूट कर ले गए थे, उसका भी हवाला नहीं है ।

आप जानते है कि सारा मामला उसी डकैती को ले कर उठा था । हम ने स्थगन प्रस्ताव दिया था, आपने उसको स्वीकार नहीं किया । फिर आप ने मंत्री महोदय को तैयार किया कि वह अल्प सूचना प्रश्न स्वीकार कर लें । लेकिन जवाब में उस डकैती का उल्लेख नहीं है । मेरे पास पूरी सूची है । गौर से सुनिए :

10 जुलाई को कीर्तिनगर में डाका पड़ा, खालसा कालेज के श्री अमरजीत सिंह और उनकी पत्नी श्रीमती बलबीर कौर को डाकुओं ने बुरी तरह घायल कर दिया ।

12 जुलाई को जनकपुरी में आधा दर्जन सशस्त्र डाकुओ ने श्री कैलासम के घर पर धावा बोला और उनहें, उनकी पत्नी और उनके एक रिश्तेदार को घायल कर दिया ।

15 जुलाई का इस में उल्लेख है ।

16 जुलाई को श्री भंडारी के घर से आधा किलोमीटर दूर श्री बालमुकुन्द महेश्वरी के घर पर डाका पड़ा ।

17 जुलाई को पुरानी सीलमपुरी के एक घर में डाका पडा । 22 साल के एक नौजवान फारूक मियां जिन्होने डाकुओ का पीछा किया, को गोली से मार दिया गया ।

18 जुलाई को किंग्सवे कैम्प में कीनिया से आई हुई तीन लड़कियों के घर पर डाकुओं ने हमला किया ।

21 जुलाई को सफदरगंज एनक्लेव के एक अध्यापक के घर को दिन दहाड़े लूट लिया गया । श्री बूथरा की जिन्दगी भर की कमाई डाकू ले गए ।

मेरा आरोप है कि मंत्री महोदय जान बूझ कर तथ्यों को दबा रहे हैं, सदन को अंधेरे में रख रहे हैं, पूरी सच्चाई सामने नही आ रही है । आप मंत्री महोदय से पहले इस बारे में खुद सवाल पूछ कर पता लगा लें कि तथ्यों को छुपाया क्यों गया है, फिर मै बाद में सवाल करूंगा ।

गृह मंत्री (श्री जैल सिंह) : आनरेबल मैम्बर, एक तरफ तो यह कह रहे हैं कि मैं अंधेरे में रख रहा हूं और दूसरी तरफ कहते हैं कि जितनी रोशनी मांगी उस से दुगुनी क्यों दी । मैं ने तो रोशनी देने के लिये कुछ बढ़ावा किया है, कम नही किया है । आनरेबल मैम्बर भारतीय जनता पार्टी के नेता से, जिन्हों ने तकरीर की है, सप्लीमेंटरी नहीं, मैं प्रार्थना करता हूं कि ये जो घटनाएं बता रहे हैं ये डकैतियां नही हैं । डकैती और राबरी में फर्क होता है (**व्यवधान**) आनरेबल स्पीकर साहब, जिन का वास्ता पड़ा है आई पी ही से वे जानते हैं कि अगर एक या दो आदमी किसी को बुला कर, धमका कर.... (**व्यवधान**)

इंडियन पीनल कोड को आप नहीं सुनना चाहते तो न सुनें, नहीं मानते हैं तो न मानें (**व्यवधान**) श्री वाजपेयी जी ने जो अखबारों का हवाला दे कर बताया कि इतनी घटनाएं हुई हैं, मैं ने उन के प्रति सिर्फ इतना ही कहा है कि ये घटनाएं डकैती की नहीं हैं, चोरी और लूटमार की हैं । मेरा मतलब यह था कि ये घटनाएं राबरी की हैं डकैती की नहीं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरा सवाल हिन्दी में था और हिन्दी में, रोबरी हो या डकौयटी हो, दोनों के लिये एक शब्द है डाका । कितने लोग हमला करते हैं, यह कानूनी मसला हो सकता है, मगर जिस पर हमला होता है, जिसे डाके का निशान बनाया जाता है, जिसे लूटा जाता है, उस को इस बात से क्या फर्क पड़ता है कि लूटने वाले 3 थे, 5 थे या 7 थे ? मेरा कहना है गृह मंत्री जी से कि वह शब्दों की जादूगरी न करें, यह अदालत नहीं है, अगर कोर्ट है तो जन अदालत है और यहां रोबरी और डकौयटी का फर्क कर के यह बहानेबाजी करने की कोशिश न करें कि रोबरी तो बढ़ गई है, मगर डकौयटी कम हो गई हैं ।

मंत्री महोदय खुद गलतबयानी कर रहे हैं, मैं इन्ही के जवाब से बताना चाहता हूं । इन्होंने जो जवाब दिया है, (**व्यवधान**) मेरे सवाल का पार्ट "सी" देखिये जिस में मैंने लारेंस रोड की डकैती की घटना का उल्लेख किया है । उस के जवाब में मंत्री महोदय ने स्वयं यह कहा है कि यह डकैती नहीं लूटमार की घटना है । (**व्यवधान**) अगर मंत्री महोदय यह कह देते कि डकैती की ये घटनाएं हैं, रौबरी की यह घटनाएं हैं तो मैं मान सकता था । इन्होंने एक मामले में फर्क कर दिया ।

एक माननीय सदस्य : अब कह दिया ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : दूसरी बात यह है इसी सिलसिले में इन का स्टेटमेंट देखिये और उस स्टेटमेंट में जो दूसरा उदाहरण है श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल का, उस को डकैती में लिखा गया है । वह किस तरीके पर डकैती लिखा गया है ? वह तो लूटमार है . दो बोरे गेहूं के लूट कर ले जाने की कोशिश की गई । जिस को यह चाहें डाका कह दें, और जिस को चाहें लूटमार कह दें, अध्यक्ष महोदय, यह बातें मैं आप से कह रहा हूं । अब मैं मंत्री जी से सवाल पूछता हूं ।

SHRI EDUARDO FALEIRO: On a point of order. Instead of asking a supplementary, he is making a speech.

MR. SPEAKER: Over-ruled.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : 22 जुलाई को रामपुरा में यह डाका पड़ा था । (**व्यवधान**) अध्यक्ष महोदय, दिल्ली का ला एंड आर्डर का सवाल पार्टी का सवाल नहीं है, आप इसे दल-बन्दी का सवाल मत बनाइये ।

अध्यक्ष महोदय : आप प्रश्न पूछिये ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं एक स्पष्ट प्रश्न पूछना चाहता हूं । 22 जुलाई, 1980 को लारेंस रोड के निकट रामपुरा में जो डाका पड़ा था, उस में डाकू 1,70,000 रुपये ले गये । वहां और भी लोग बैठे हुए थे, डाकू उन की अंगूठियां और जंजीरें ले गये । क्या यह सच है कि डाकुओं को पकड़ने के बजाये जिन्हें डाकुओं ने अपना निशाना बनाया था, उन्हीं दो लोगों को पुलिस ने गैर-कानूनी तौर से पांच छः दिन से अपनी हिरासत में रख रखा है, उन्हें परेशान किया जा रहा है, उन के घर वालों को उन से मिलने नहीं दिया जाता है और उन में से जो एक आदमी छोड़ दिया गया है, उस के शरीर पर चोटों के निशान हैं ? क्या सरकार चाहती है कि मादीपुर जैसी घटना लारेंस रोड के थाने में भी हो और राहगढ़िया की तरह कोई पुलिस के जुर्मों का शिकार हो जाये ? क्या यह सच है कि डाकुओं को पकड़ने के बजाये पुलिस ने ऐसे दो आदमी हिरासत में ले लिये, जो डाकुओं का निशाना बने थे ?

श्री जैल सिंह : आनरेबल स्पीकर साहब, मैं श्री बाजपेयी का बड़ा सत्कार करता हूं । वह बहुत पुराने पार्लियामेंटेरियन हैं । सप्लीमेंटरी सवाल करते करते वह एक बहुत लम्बी तकरीर कर गये । इसलिये मुझे भी लम्बा जवाब देना पड़ेगा, क्योंकि मैं उन का आदर करता हूं ।

उन्हों ने 1,70,000 रुपये वाले जिस वाकये का जिक्र किया है, अगर उस में निर्दोष लोगों को पकड़ा गया होगा, तो मैं उस की जानकारी करवा लूंगा, और अगर दोषियों को पकड़ा होगा, तो यह दुरुत होगा ।

पिछले साल जनवरी से लेकर इस महीने तक, और इस साल जनवरी से ले कर इस महीने तक, के जो आंकड़े हैं, वे क्या बोलते हैं ? आनरेबल मेम्बर ने सरकार पर से बड़ा इल्जाम यह लगाया कि डाके बढ़ गये हैं, क्राइम बढ़ गया है । मैं उन आंकड़ों को सदन की जानकारी के लिये रखना चाहता हूं ।

1979 के पहले छः महीनों में डकैतियां 44 थीं और इस साल के उन्हीं छः महीनों में 22 थीं । एटेम्प्ट आफ मर्डर : 1979 में 181 और इस साल 153, राबरी : 1979 में 347 और इस साल 186, रायट्स : 1979 में 170 और इस साल 100 रह गये, चेन-स्नैचिंग : 1979 में 181 और इस साल 101, हर्ट्स : 1979 में 1141 और उस के मुकाबले में इस साल 1039 थे ।

मैं ज्यादा आंकड़े देना नहीं चाहता हूं, क्योंकि इस में हाउस का टाइम लगेगा । लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि पिछले साल जनवरी से ले कर जुलाई तक जो वाकयात हुए, वे थे 23,146, और इस साल 20,118 हुए । इस से आप कम्परेटिव अन्दाजा लगा सकते हैं ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैंने मंत्री महोदय से जो सवाल पूछा था उस का जवाब नहीं आया है ।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कह दिया है कि वह जानकारी करवा लेंगे ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गृह मंत्री महोदय ने बहुत से आंकड़े दिये हैं । मगर जिस तरह से अनाज के आंकड़ों से भूखे का पेट नहीं भर सकता है, उसी तरह से ये आंकड़े दिल्ली के नागरिकों को यह विश्वास नहीं दिला सकते कि सरकार उन के जानो-माल और इज्जत

की हिफाजत की पूरी कोशिश कर रही है। आज सत्तारूढ़ पार्टी ने, दिल्ली की कांग्रेस पार्टी ने कानून और व्यवस्था की स्थिति पर चिन्ता प्रकट की है। यह घर का मामला नहीं है। कांग्रेस के पार्लियामेंट के मेम्बरों ने बयान दिया, स्वयं ज्ञानी जी ने दिल्ली के पुलिस अफसरों को बुला कर कहा है कि उन की कार्यक्षमता में वृद्धि होनी चाहिए, अपराध घटने चाहियें। मेरी समझ में नहीं आता, वह हमारा मुंह बन्द करने के लिये ऐसा क्यों कर रहे हैं... (व्यवधान)...मैं सवाल पूछना चाहता हूं।

सचाई यह है कि दिल्ली में अपराध बढ़े हैं और असुरक्षा की भावना बढ़ी है। इस का एक सब से बड़ा कारण यह है कि पिछले छः महीनों में दिल्ली की पुलिस का राजनीतिकरण, पोलिटिकलाइजेशन कर दिया गया पुलिस कमिश्नर की नियुक्ति से ले कर एक कांस्टेबल की नियुक्ति तक। पुलिस कमिश्नर नियुक्त किए गए सीनियर अफसरों को हटा कर, उनके अधिकार पर छापा मार कर और सिपाही के लिए दिल्ली में कोई नौजवान उपलब्ध नहीं है, गुरदासपुर से नौजवान भर्ती कर के लाए जा रहे हैं। पुलिस में डिमारेलाइजेशन पैदा किया जा रहा है। इससे पुलिस वाले जिम्मेदारी नहीं निभा रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री महोदय यह जो पोलिटिकलाइजेशन हो रहा है, पुलिस का, भगवान के लिए इसको बन्द करेंगे?

श्री जैल सिंह: पुलिस में जो पोलिटिकलाइजेशन हुआ है इस को बन्द करेंगे लेकिन फिर मैं अदब से कहता हूं कि यह डिबेट नहीं है, आप को सप्लीमेंट री करना चाहिए था, वह एक लम्बी तकरार करने के बाद कर रहे हैं। मेरा मतलब आप का मुंह बन्द करने का नहीं है। मेरा मतलब आप को असलियत बताने का है। पोलिटिकलाइजेशन पुलिस का किया गया था, हम उस को रोक रहे हैं और जो वाकयात आप बताते है ऐसे होते रहे हैं, हम उस को रोक रहे हैं। एक बात मैं मानता हूं, क्राइम में जितनी मैं चाहता था उतनी कमी नहीं हुई और अब भी मुझे चिन्ता है आप के साथ-साथ कि क्राइम को खत्म करने के लिए और सख्त उपाय करने चाहिएं। इसके लिये मैं ने मीटिंगें भी बुलाई हैं, लोगों की कोआपरेशन को भी इनवाइट किया है और जहां-जहां कमी है, जहां आबादी बढ़ गई, पुराने जमाने के थाने थे, वहां फोर्स कम थी, एक्विपमेंट कम थे, उन की ट्रांसपोर्ट निकम्मी थी, सब चीजों को मंजूर कर के उन को तैयार किया। लेकिन जहां भी पुलिस की तरफ से निर्दोष लोगों को मारा जायगा, पोलिटिकली किसी का नुकसान किया जायगा, धक्का दिया जायगा, ऐसी बातों को बर्दाश्त नहीं किया जायगा। ये पुराने जमाने की बातें हैं, आज की नहीं हैं।

DR VASANT KUMAR PANDIT: It cannot be gainsaid that the incidence of crime in the city of Delhi is increasing. It is of common knowledge to us. Newspapers are daily coming out with stories of theft, robbery, dacoity, offences against women so much so that the life of a common citizen in Delhi is terrified and there is no safety or security of property or of human life.

There are three ways of handling the situation: prevention of crime, attendance to crime and follow-up action on crime. On all these three fronts, the Government has failed. Any department of police would hold its head in shame in such a condition.

The hon. Minister has replied to my hon. friend, Mr. Vajpayee, that he has not politicalised and, on the contrary, he is trying to de-politicalise the police force.

MR. SPEAKER: You put a question.

DR. VASANT KUMAR PANDIT: Is it a fact that a Deputy Commissioner was despatched to Gurdaspur to recruit people and he has recruited 300 people on oral examination only, setting aside all the norms of police recruitment and that man has been awarded the post of a district chief? Is it not a fact that the entire morale of police force in the city has gone to the lowest ebb and, if so, what steps the Government is taking to boost up the morale and to stop dissatisfaction among those officers who have been suspended or superseded or despatched to other places?

श्री जैल सिंह: स्पीकर साहब मेरी समझ में नहीं आया कि बैरोमीटर क्या होता है क्राइम्स बढ़ने का, उसको गिनती करने का, ये अखबारों की खबरों के आधार पर कहते है लेकिन पुरानी फाइलें देखी जा सकती हैं।

दूसरी बात उन्होंने कही कि पुलिस का मोरल गिर गया है और इसको बहाल करने के लिए उन्होंने सुझाव दिए हैं, तीन सुझाव दिए हैं और वह तीनों सुझाव मैंने नोट कर लिए हैं। लेकिन यह सप्लीमेण्ट्री का हिस्सा नहीं है, उन्होंने कहा है कि जो भर्ती किए गए हैं एक ही जिले से किए गये हैं। पुलिस में जो भर्ती की जाती है उसके लिए कुछ क्वालिफिकेशन्स मुकर्रर हैं — एजूकेशनल, फिजिकल और अदरवाइज — उन क्वालिफिकेशन्स को इग्नोर करके किसी आदमी को अगर लिया गया हो तो हम उसकी जानकारी कर सकते हैं। वे उसका नाम बता दें। अगर यह कहें कि एक इलाके से ज्यादा आए हैं तो यह भर्ती खुली है, इसमें दूसरे इलाके से भी कभी ज्यादा आ सकते हैं, कभी कम आ सकते हैं। अगर बेकायदगी की गई

हो तो उस पर हम ऐक्शन लेने के लिए तैयार हैं । (व्यवधान)

DR. VASANT KUMAR PANDIT: I wanted to know what specific steps have been taken by Government to prevent crimes in Delhi.

MR. SPEAKER: He has already replied to that. Mr. Lakkappa.

SHRI K. LAKKAPPA: My friend, Mr. Atal Bihari Vapayee, has made a kathakali dance regarding crimes being increased in Delhi. (*Interruption*) I would like to say that our Party and the Government are not going to support the crimes, arson, looting and dacoity being perpetrated in Delhi or elsewhere in the country. The law and order situation in the country had deteriorated and the crime rates had increased during the period of Janata rule because of the reason that anti-social elements had infiltrated even into the police camp and at the government level. At the time when the Congress Government was there, all those anti-social elements, including many of the anti-social elements in Delhi, had been put behind the bars, so that they could not operate. But, unfortunately, during the two and a half years of Janata rule, 2,000 people had been released and those people have been still operating successfully and are creating in Delhi this kind of a law and order situation I would like to know whether there are any political parties encouraging such goondas and anti-social elements in order to make political gains, and if that is the situation, I would like the Home Minister to tell us how many of them have been put behind the bars, arrested, and what action has been taken on these anti-social elements who are backed by such political parties.

Secondly, I would like to know this. The Home Minister has convened the officers' meeting. I want to know what short term measures and long term measures are being taken to suppress the anti-social elements who had infiltrated during the Janata period and who are creating a political pollution and are adding to the number of crimes. I would like to know the steps taken by the Home Ministry to suppress these crimes and anti-social elements in the country.

श्री जैल सिंह : माननीय स्पीकर साहब, जो माननीय सदस्य का क्वेश्चन है, उसमें काफी...

एक माननीय सदस्य : वह क्वेश्चन नहीं है, भाषण है ।

श्री जैल सिंह : यह तो आनरेबिल वाजपेयी जी ने शुरू कर दिया है । मैं तो स्पीकर साहब से अलहदा पूछंगा कि शार्ट-नोटिस क्वेश्चन में और दूसरे क्वेश्चन में कितना अन्तर होता है ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वही जो राबरी और डैकोयटी में होता है ।

श्री जैल सिंह : स्पीकर साहब, वाजपेयी जी आपकी मदद में आ गए और आपको फिक्र करने की जरूरत नहीं है । राबरी और डेकोयटी में जितना फर्क होता है मैं तो उनकी बात मान लूंगा। म उनकी बात की कदर करता हूं । लेकिन मैं प्रार्थना करता हूं कि भाषण के बजाय सप्लीमेंट्री कर लीजिए और भाषण का और समय रख लीजिए। खैर, अब तो उन्होंने शुरू कर दिया है... (व्यवधान)...आनरेबिल स्पीकर साहब, इनके सप्लीमेंट्री में जो शुबहे पैदा किए गए हैं, वे दुरस्त हैं और इसके लिए मैं यही कहता हूं कि मैं स्ट्रीनिंग करूंगा । बहुत से ऐसे एलीमेंट्स जो सियासी तौर पर और काम्यूनल नुकते-नज़र से पुलिस में भर्ती हो गए हैं, उनको छांटने की कोशिश करूंगा । उन्होंने पूछा कि क्या उपाय कर रहे हैं— शार्ट टर्म और लांग टर्म ? इसके लिए मैंने दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन के आला-अफसरों को भी बुलाया है और पोलिटिकल नुमाइंदों को भी बुलाया है । मैं इस आंकड़े में नहीं पड़ना चाहता हूं, क्योंकि आंकड़ों में पड़ने से आनरेबिल मैम्बरों को तकलीफ होती है, लेकिन लोग क्या कहते हैं, लोगों की आवाज क्या है । इसके लिए मैं मानता हूं कि चिन्ता है... (व्यवधान)...

श्री मनीराम बागड़ी : अध्यक्ष महोदय....

श्री जैल सिंह : आनरेबिल स्पीकर साहब, मैं बागड़ी जी का बड़ा अदब करता हूं, लेकिन उनकी हमेशा यह आदत रही है कि न तो वे सप्लीमेंट्री पूछते हैं, न प्वाइंट आफ आर्डर पूछते हैं, अपनी मर्जी से शुरू कर देते हैं ।

खैर, मैं विनती कर रहा था कि जो कमियां हैं, उनको डिस्कस करके हल निकालने की कोशिश की जाए । इसके अलावा मैंने पब्लिक के नुमाइंदों से भी बात की है । इसके लिए केवल

दो ही तरीके हो सकते हैं। दिल्ली एडमिनिस्ट्रेशन के अन्दर जितने नुमाइंदे हैं, अब कारपोरेशन तो है नहीं, अब तो सिर्फ पार्लियामेंट है, पार्लियामेंट के जितने मैम्बर हैं वे बैठ जायें, अगर एक मैम्बर के सिवाय कोई कह दे कि मेरी बात में गलती है, तो मैं उसकी बात मान लूंगा। अब एक मैम्बर जो पांच हजार की मैजोरिटी से जीता है और वह कहे कि यह आवाम की आवाज है और दूसरे छः यह कहें कि यह आवाम की आवाज नहीं है, तो यह क्या बात हुई। आवाम की बात हर एक को कहने का हक है, लेकिन देखना पड़ता है कि आवाम उसके साथ है या नहीं।

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी : दिल्ली में चुनाव करायें।

श्री जैल सिंह : चुनाव होंगे, लेकिन मैं आपको बता दूं कि अगर आपका यही हाल रहा, और आज जितनी पार्टियां हैं, तो पहले चुनाव में जितने वोट मिले थे, वे भी अब नहीं मिलेंगे।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTER OF ENERGY (SHRI VIKRAM MAHAJAN): Sir, short-notice question does not mean an hour-long discussion.

MR. SPEAKER: It is like any other question.

DR. KARAN SINGH: Supplementaries on this question produced a lot of amusement But neither those who have been the victims, nor, I am sure, even the government can derive so much satisfaction from the said decline in the crime rate.

The question is with regard to dacoities. Now the dacoits, it is well known, operate from the States surrounding Delhi also, whether it is Haryana, Rajasthan or UP. Has the hon. Home Minister initiated steps to ensure that the Police organisations of the territory of Delhi and the surrounding States undertake a co-ordinated and a co-operative anti-dacoity drive so that this menace can be put an end to? Whether there are 4 dacoities or 2 dacoities is not the matter. I do not think we can derive any satisfaction even if there is a single dacoity in the capital of India. So what steps are you taking in a co-ordinated fashion with the surrounding States to root out the dacoits at the places where they operate from, to take a forward policy with regard to this so that Delhi is safe from this menace which is a standing disgrace to our nation.

श्री जैल सिंह : डाक्टर साहब ने बड़ा महत्वपूर्ण सवाल पूछा है। इस के लिए जरूरी था कि जो एडज्वाइनिंग एरियाज है, जैसे हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान—इन प्रान्तों के पुलिस अफसरों के साथ दिल्ली पुलिस राबता कायम करे, यह किया गया है, उन्होंने उन से बात भी की है। यह भी सच है कि दिल्ली में तकरीबन 4 लाख से लेकर 5 लाख लोग रोजाना आते और वापस जाते हैं। उन में क्रिमनल-टाइप के लोग भी आ जाते हैं, जिन को डिटेक्ट करना अकेले दिल्ली पुलिस का काम नहीं है, उस में पड़ौसी रियासतें ही नहीं, बल्कि तमाम हिन्दुस्तान की रियासतों की सी० आई० डी० और पुलिस के आला-अफसरों से राबता कायम करना है, ताकि कोई चला जाय तो उस को पकड़ सकें।

इस के अलावा यह इन्तजाम भी किया गया है कि पहले दिल्ली में जो बैड-करैक्टर्स होते थे, उनको यहां से निकाल कर दूसरे प्रान्तों में भेज देते थे, लेकिन अब हम ने यह कहा है—चाहे कानून बदलना पड़े, रूल्ज बदलने पड़ें या कोड बदलना पड़े, इन को बदलो, लेकिन ऐसा इन्तजाम होना चाहिए कि जो बदमाश और गुण्डे हैं वे छुप न सकें, छुटकारा मिलने के बाद वे क्राइम करने के काबिल न हो सकें। पुलिस ने मेरे पास यह शिकायत की है कि हम तीन तीन, चार-चार मुकदमों मे गिरफ्तार करते हैं, लेकिन वे जमानत पर रिहा हो जाते हैं और फिर क्राइम करते हैं। ऐसी बातों को देखने के लिए कानून में जो भी संशोधन करना पडेगा, उस के लिए हम ने तैयारी कर रखी है। मैं आशा रखता हूं डाक्टर साहब जैसे विद्वान मैम्बर इस मामले में हमारी और भी ज्यादा सहायता करेंगे।

MR. SPEAKER: Shri Bosu.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Mr. Speaker, Sir, will the hon. Minister kindly tell us whether it is a fact or not that according to the Home Ministry's annual report, for the crime, in the capital of Delhi, during the fiscal year ending 31st March, 1980, murders rose from 176 to 197, attempt to murder rose from 228 to 304, riots rose from 330 to 353 and thefts rose from 24,829 to 25,560? Also Mr. Makwana has stated on the floor of the House that only for four months February to May—June and July not covered—67 murders had taken place

which has no precedents at all. This capital city has been described as 'Mini-Chicago'.

Is he aware of the fact that these are what have been published by his own ministry? Yet he is misleading this House. Will you answer this question as to whether the facts and figures are correct or not?

श्री जैल सिंह : जो आंकड़े इन्होंने बतलाए हैं, ऐसा लगता है कि उन में 9 महीने जनता के डाल दिए हैं और तीन महीने कांग्रेस (आई) के डाल दिए हैं। आनरेबिल स्पीकर साहब, ज्योतिर्मय बसु कभी कभी बहुत इन्साफ पसंद हो जाते हैं। वह चाहते हैं कि वर्तमान सरकार को भी थोड़ा समझाया जाए और पुरानी सरकार का भी पर्दा उठाया जाए। इसके लिए मैं उनको धन्यवाद देता हूं।

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Sir, from February to May 1980, 67 murders took place. This is from Mr. Makwana's statement on the floor of the House. There is no precedence of this. (*Interruptions*) Was it so when the Janata Party Government in power? Please do not talk about religion and do not talk about untruths at the same breath.

MR. SPEAKER: Mr. Bhatia. This will be the last supplementary.

SHRI R. L. BHATIA: Sir, there has been less crime in Delhi now. Therefore, may I know from the hon. Minister whether it is due to the fact that there has been better administration and greater coordination among the police. I would like to know this from him.

श्री जैल सिंह : पहले से कहीं ज्यादा कोआर्डीनेशन है और बेटर एडमिनिस्ट्रेशन है लेकिन अभी कुछ और काम करने की जरूरत है और कुछ कमियां हैं, जिन को दूर करना चाहते हैं।

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Kidnapping of Woman near Punjabi Bagh, Delhi

*760. SHRI RASHEED MASOOD: Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to a news item in the *Times of India* dated the 2nd July, 1980 regarding kidnapping of woman near Punjabi Bagh, Delhi; and

(b) if so, the steps taken against the constables involved in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI YOGENDRA MAKWANA): (a) Yes, Sir.

(b) Constable Surinder Singh of D.A.P. Ist Battalion, has been arrested and he is in judicial custody alongwith three other accused.

Difficulties of Small Industries in Shahdara, Delhi

*762. SHRI V. KISHORE CHANDRA S. DEO: Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) whether about a thouand small industrial units in Shahdara area in Delhi have been facing difficulties due to lack of amenities and facilities needed for their growth; and

(b) if so, the action taken by the Delhi Administration in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (SHRI CHARANJIT CHANANA: (a) The registered small units in the Shahdara area are being provided various types of assistance normally made available to other small scale units in the Union Territory of Delhi. There are, however, general problems relating to civic amenities which are common to all the trans-Jamuna colonies.

(b) Does not arise.

Suspension of Counter Insurgency Operations in Mizoram

*765. SHRI GHULAM RASOOL KOCHAK: Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether the Union Government have on the 4th July, 1980 declared end